आधुनिकयुगी भगवान

स्वदेशी पे विदेशी चिकित्सा इलाज प्रणाली का तमाशा

क्या हम इतने व्यवहारवादी हो गए है की हमारा मूलरूप आदि हमारी वास्तविकता लुप्त हो जाएगी ?

यह मान्य है की सारे वैद्य (डॉक्टर) डिग्री लेने के बाद अपनी प्रथम प्राथमिकता पर मरीज को रखते है|

परन्तु क्या आज भी सभी डॉक्टरों के लिए मरीज का स्वास्थ्य सर्वोपरि रह गया है, यह एक दुविधात्मक प्रश्न है ?

यह इसलिए दुविधा का विषय बन गया है, क्योकि आज के समय में वैद्यो और मरीजों की विश्वसनीयता व उनके बीच श्रृद्धा/समर्पण/सेवाभाव के अभाव एवं चिकित्सा क्षेत्र में अनावश्यक रूप से लूट मार मचाने वाले ज्यादातर चिकित्सको की संख्या में बढ़त के कारण व एलोपैथी चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में अमानवीय महंगाई के कारण, जो चिकित्सक अपनी सेवाए पूर्ण निष्ठा के साथ प्रदान कर रहे है या करना चाहते है उनका और उनकी सेवाओं का हनन किया जा रहा है|

विनिर्दिष्ट रूप से उनका जिनका लक्ष्य मरीज को किसी भी इलाज पद्धति से पूर्णतः उपचारात्मक स्वास्थ्य प्रदान करना होता है न की स्वयं की दुकान चलाने के लिए मरीज को धीरे धीरे खोकला करना|

मै ये नहीं बोलती की सब सिर्फ दुकान चलाने के लिए ऐसा कर रहे, ये हमारे चिकित्सा शिक्षा में विभिन्न पद्धतियों और उनके मध्य में समन्वय/मेलजोल/वित्तीय उन्नयन व आपस में एक दूसरे के लिए सम्मान में कमीके कारण भी है|

इस विषय पर जो भी अपने विचार प्रकट करता है तो उसकी सही बात को भी दबा दिया जाता है|

क्योकि यह एक सालो से चल रहा ढर्रा है, जो एक विचारणीय/विचारक्रांति की स्तिथि उत्पन्न कर देगा या हमारे स्वदेशी इलाज प्रणाली को बेच खाएगा|

उदहारण के लिए हम समझदार होने के नाते यह अनुमान लगा सकते है की इस विश्वआपदा में भी हम दूसरे देशो के मुकाबले अच्छा प्रदर्शन कर पा रहे है, हमारे लोगो की मृत्युदर कम है वो इसलिए नहीं की एलोपैथी की दवाइया काम कर पा रही,साथ में जो लोग उस बीमारी से ठीक हो पा रहे उसमे हमारे भारतीय इलाज जिसको हम सब घरेलु उपाय बोल के सेवन कर रहे उन सबका हमारी पूर्व प्रतिरक्षा करने में व हमारी इम्युनिटी अच्छी करने मै बहुत बड़ा व सराहनीय योगदान है|

वो तो हमारा दुर्भाग्य है की हमारे यह स्वदेशी वैद्य/डॉक्टर कही लुप्त होते जा रहे और जो है उन्हें उचित सुविधाए उपचार अनुसंधान के लिए नहीं दी जा रही है|

उन्हें क्लीनिकल परिक्षण के लिए मरीज दिए ही नहीं जाते है और साथ में आधुनिकता के इस डोर ने एक आम इंसान की स्वयं सोचने की क्षमताओं को कम कर दिया है व उनके अवचेतन मन व उसकी रोगप्रतिरोधक क्षमताओं को ही जकड लिया है |

ऐसा इसलिए है क्योकि एक तो पूरी इलाज प्रणाली जिसको एक बड़े समूह और विचारधारा ने जिसे जकड़ रखा है ,उस प्रणाली को पूर्णतः बदलकर १३० करोड़ लोगो पर लागु करना इतना आसान नहीं|

इनके देश विदेश मै बड़े समूह है व एक पूरी जमात है ऐसे लोगो की जो सिर्फ पैसे या सिर्फ नौकरी करने के लिए इस पेशे में आए है | जिसके कारण एक बड़ा वर्ग, भारत में चिकित्सा क्षेत्र जिसकी देन है वही आयुर्वेदा व योग, जिसे आज कोरोना जैसी महामारी में लोगो की अप्रत्यक्ष रूप से मदद करना पड़ रही जो लोगो की रोग प्रतिरोधक क्षमताए बड़ा रहा| जिसे एक होम रेमेडी के नाम पर डॉक्टर स्वयं का उत्पादन बना के बेच रहे जो की आयुर्वेदा व उनके लोगो की देन है |

अगर हमे सफलता पूर्ण इस आपदा का या किसी भी बीमारी का सामना करना है और पुरे विश्व मै पुनः स्वास्थ जगत मै भारत का परचम लहराना है, तो समन्वय के साथ व मानसिक एकता के साथ कार्य करने की और सरकार को स्वदेशी इलाज पद्धतियों को तुलनात्मक रूप से देखे तो ज्यादा वित्तीय सहायता प्रदान करने की आवश्यकता है, क्युकी आज भी जिन बीमारियों मै एलोपैथी सिर्फ लक्षणों को महसूस करने से रोकती है, उनमे कई बीमारियों मै भारत मै इलाज संभव है, जिन इलाजो को अग्रेजी और पाश्च्यात्य विचारधारा के लोग उन् इलाज पद्धतियों के बारे मै गलत अफ़वाए फैला रहे और झूटी विवेचना करते है | और हमारे अच्छे बुद्धिमानी बच्चे ऐसे लोगो की विचारधारा के कारण भारतीय इलाज पद्धति को सीखने व उसकी प्रैक्टिस करने से डरते है|

यह लेख मेने हमारे माननीय प्रधान मंत्री जी जिन्होंने तालाबंदी के दौरान हर अच्छी स्वदेशी उत्पादन जो हो रही उन चीजों को वोकल करने के लिए कहा |उस बात के समर्थन के लिए लिखा है |

मै स्वयं मेडिकल छात्र हु

परन्तु मेरा यह मानना है की हमे किसी भी प्रणाली के सिद्धांतो के लिए स्वयं को कठोर नहीं बनाना चाहिए,

बल्कि हमे हमारे सिद्धांत और उन् सिद्धांतो का दायरा हमारे कर्त्तव्य के लिए तय करना चाहिए और हमारा सर्वोत्तम संभव प्रयास उस कर्त्तव्य के लिए देना चाहिए | अगर हमारे पास कोई मरीज आया है और हमे पता है की हमारी चिकित्सा प्रणाली मै इसका इलाज नहीं है, तो सामने वाले को खोकला करने की बजाय , अनावश्यक रूप से दवाइया देने के बजाय.हमे उसे उस प्रणाली के चिकित्सक से इलाज दिलवाना चाहिए जहा थोड़ी सी भी ठीक होने की उम्मीद हो न की उनकी चिकित्सा प्रणाली की आलोचना करनी चाहिए|

सभी चिकित्सा प्रणालीयो के अलग-अलग स्तर पर फायदे और नुक्सान है, हमे चिकित्सा क्षेत्र मै उन्नति के लिए ऐसे इलाज बनाने व खोजने/अनुसन्धान करने की आवश्यकता है ,जो स्वदेशी-विदेशी पद्धतियों के बीचसमन्वय स्थापित कर सभी पद्धतियों के फायदो की समीक्षा करते हुए कम से कम दुष्प्रभाव के साथ संभव हो सके, जो इंसान की बीमारी को जड़ से ख़तम करने मै योगदान प्रदान करे,न की सिर्फ लक्षण ख़तम करने मे|

मै पूर्णतः व्यावसायिक रूप से काम करने वाले या सिर्फ नौकरी कर रहे डॉक्टरों के विपक्ष मै नहीं हूँ|क्योकि कही जगह उनकी कोई गलती ही नहीं है, यह मूलतः चिकित्सा शिक्षा प्रणाली और जो लोगो की जमाते पूरी प्रणाली पर कब्ज़ा करके बैठे है उनकी गलती है| मेरे कटाक्ष का अभिप्राय बस इतना सा है की गीता में चार तरह के लोगो का वर्णन किया गया है कर्मो के आधार पर,जिन लोगो की हर क्षेत्र में अपनी-अपनी आवश्यकता और उनकी भूमिकाए है| उन लोगो को एक क्षेत्र में एक ही भूमिका को निभाने की कोशिश करनी चाहिए और उनकी दूसरी कोई रूचि हो तो उसके लिए दूसरे क्षेत्र के कामो को अलपकालीन समय के लिए आवश्यकता अनुसार चयन कर पूर्ण करना चाहिए| और

उनकी चुनी गई भूमिका को ही पूर्णतः निष्ठा के साथ निभाना चाहिए| जैसा हम जानते और समझते है चिकित्सा क्षेत्र के बिना हर क्षेत्र अधूरा है तो हमे हमारी गरिमा व हमारे स्वयं की योग्यता अनुसार स्वास्थ क्षेत्र में भी काम करना चाहिए | यहाँ तक की सरकार को भी थोड़ी स्वतंत्रता वैद्यो\डॉक्टरों को देनी चाहिए| जरुरी नहीं की हर मेडिकल के व्यक्ति की क्लीनिकल प्रैक्टिस व सैद्धांतिक ज्ञान अच्छा ही हो, हो सकता है उनमे से कोई उन्ही के क्षेत्र में कोई ओर योग्यता रखता हो, कोई स्वास्थ मंत्रालय सँभालने लायक हो सकता है, उसके लिए बहुत पढ़ाकू होने की भी आवश्यकता नहीं,परन्तु कुछ मानवीय सिद्धांतो ओर कुछ विशेष कौशल की आवश्यकता है , कोई हॉस्पिटल मैनजमेंट या व्यापारिक रूप से ज्यादा समझदार हो, कोई चिकित्सक अत्यंत सेवाभावी हो या कोई अच्छा वक्ता हो|

हर डॉक्टर\वैद्य को आप जिस भी चीज के लिए नियुक्त कर रहे उसकी नियुक्ति, नियोक्ताओं को भी इंसान की स्वयं रूचि व उनकी योग्यता ओर उनकी उस कार्य के प्रति उपयोगीता अनुसार करना चाहिए| आज के समय में कोई सा भी कार्य या क्षेत्र, बिना धन के निधन रुपी है परन्तु हमे यह सब समझते हुए और हमारे अंदर समानता व सेवाभाव रखते हुए हमारे कर्मो के प्रति निष्ठा से कार्य करने की आवश्यकता है |

चिकित्सा शिक्षा ओर विदेशी चिकित्सा पद्धति के पाश्चात्य विचारधारा के बहुत से लोग मेरे विचारो से सहमत नहीं होंगे,इसलिए में अपना परिचय आपसे नहीं करवा पाऊँगी|

धन्यवाद,

एक भारतीय सेवाभावी समाजसेवी मेडिकल छात्रा